बी. ए. प्रोग्राम

सेमेस्टर :- VI

प्रश्नपत्र :- अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

1. स्त्री अस्मिता को स्पष्ट करते हुए स्त्री जीवन के विभिन्न प्रश्नों पर प्रकाश डालिए..?

2. दलित विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए दलित आन्दोल में फुले और अम्बेडकर के योगदान को बताइए..??

3. आदिवासी अस्मिता को स्पष्ट करते हुए आदिवासियों के जीवन की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालिए..?

4. 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त दलित जीवन की प्रमुख समस्याओं को स्पष्ट करो..??

5. टिप्पणी :-

क. दलित अस्मिता से आशय

ख. स्त्री अस्मिता से आशय

ग. आदिवासी अस्मिता से आशय

घ. 'कितनी व्यथा' कविता की मूल संवेदना

ण. 'मैं किसकी औरत हूँ' कविता में अभिव्यक्त स्त्री चेतना का स्वर

च. 'मुर्दहिया' में दलित जीवन

6. निम्न की सप्रसंग व्यख्या कीजिए -

१. देसवा आज़ाद अहै हम तो गुलमवा,

हमरे लिए न सरकार ।

ऐसन कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'

हमरउ करावा उरधार।।

२. उनमुक्त हूँ देखो

और यह आसमान

समुद्र यह और उसकी लहरें

हवा यह

और इसमें बसी प्रकृति की गंध सब मेरी हैं।।

३.मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैंने अपने आपको बचाया है।अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ... पर कहीं तो चोट के निशान नहीं... दुनियाँ के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई।इस उम्र में भी पूरी की पूरी साबुत औरत हुन, जो जिंदगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज़ है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती हैं।

४. फरजाना कमरे में पहुंच कर उलझने लगी। बेकरारी में इधर उधर चक्कर लगा वह धम्म से बिस्तर पर बैठ सोचने लगी कि आखिर वह इतनी आसानी से शादी के लिए राज़ी क्यों हो गई। उसे एम. ए. करना था। आई.के.एस. में बैठना था । अम्मी अब्बू को एक लड़का क्या पसन्द आ गया, उन्होंने आंखे ही फेर लीं। उन्हें अब कुछ भी याद नहीं, न आपने वायदा , न उसका सपना...मेरी शादी है मगर, मुझसे ही नहीं पूछा गया।।